



ॐ नमः श्रीवज्रसत्ताय ॥ ॐ आरुं श्रीमद्वज्र
हस्तसङ्गुनवनचनशकमलाय सम्यक् कलाना
वरासनकनाय नमोऽरुं ॥ नमस्तु नमस्तु
स्तु नमस्तु नमानमः रुद्राहं स्त्री नमः
स्यामिगुननाथप्रसीदम ॥ यस्य प्रसादकि

नरो हस्तनिगात्मनस्तनत्रपरापनिकनप्र
हगांधकाना यध्वं गुनाविता हस्तो सविता
समृद्धे नस्मेनमस्तु निनियं गुनरास्तु
नाय ॥ ॥ पंचवृद्ध ॥ नमामि पंचवृद्धां
स्तान् जिनधनुकनैऽकान् मध्ववे

भाचनं वृद्धं पंचवृद्धं नमाम्यहं ॥ ॥ थ
पिया ॥ नीलसीतां ऊनीला एव ॥ अऊ
स्या ॥ संगसंगिनी ॥ एकहं त्वी महावाक् अऊ
या एव मामकि ॥ ॥ एव ॥ आनंदं पन
मानंदं विनमानंदसंगी ॥ पंचानंदं

दाहकृत् प्रहामा मि ऊया एव ॥ ॥ म
नीऊ अवीऊ हीजा नी ॥ वे ॥ वे ॥ महा काली
वे ॥ नल महं वंद ॥ सर्वसं पद्विदायकं ॥
॥ ॥ सि ॥ ॥ अत्यन्तक नृत्तमानं ॥ प्रे ॥
गुक नमस्तुते ॥ कालगुक्त्या मि वरुण न

मस्तु चक्रागिनीं ॥ माहनि ॥ ऊहनीस्तं
हनीनाथ माहिह्म कर्षिहीनथ ॥ वही
कनशददव सर्वसिद्धिं न माम्यहं ॥ सर्ग
आशुर्वेदियह्मवृद्धि वृद्धि प्रहासखस्तु ॥
आनाग्यधनसंगान सफवृद्धिं न माम्यहं

गह्य ॥ गह्यपतिचहेनम्ब विघ्ननाऊं विना
यकं ॥ सर्वविघ्नहर्त्री देवी गह्यविघ्न नमा
म्यहं ॥ महाकाय ॥ रुक्मवर्धनी वानरुटी
बुद्धिमानसननऊकी ॥ कर्त्तिकपालधनं नार्थ
महाकाली नमाम्यहं ॥ नमः श्रीचक्रसे

वनाय ॥ सर्वहृद्दानसंदाहं जगदर्थप्रसाच
की ॥ चिंगामशिमिवाइहर्गं श्रीसर्वननमास्तु
न ॥ माफंविध्वं महाहृदनं सर्वस्मिन्सदास्थि
नी ॥ कृपाकाधं महाशोडं श्रीसर्वननमास्तु
हं ॥ ॥ वज्रवानाहिया ॥ नत्वा श्रीवज्रवाना

हि सर्वपापप्रमाचनि ॥ मानविध्वंसिनी
द्विवृद्धत्वं हतदायिनि ॥ ॥ चंडमहाना
यदा ॥ कृष्णवर्धं महावीनं खड्गपाधमंगक
नी ॥ सर्वदुष्टनिहंनं च अचलवीनं नमा
म्यही ॥ ॥ योगमन्त्रया ॥ सर्वलवात्मकं ना

थं. आगिनी जालनायकं. आगर्भं वनं ऊर्गं
नार्थं. गुर्गं चादनमानम. हानजाकिनीम
हादं विसहजानन्देकनृपिणी. प्रहृष्टान.
स्वरूपात्मा वंदं हं माऊदायसी. विद्याध
नि. नमस्तु ननु नवीन. गुमानहयनाथानि

गुनसर्वार्थिदगात्र. स्वाहाकानेनमास्तु
हीमसन. महानाजनागाऊपहीमसन. म
हाहृदनानन्दसीराहगभऊ. प्रहृष्टार्थलाहे
कपाऊ. अनश्नमीनाथनीनाहवदिसुदा
यी. वहीधना. नमस्तु सुमहादेवी. सर्व

सुखार्थदायनी ॥ नमस्तु दिव्यरूपी च वसु
धना नमस्तु ॥ ॥ चैषया ॥ पंचवर्धन
समश्चार्यः पंचसूत्रात्पणवयं ॥ प्रवृत्तो पं
चकलात्मा पंचवृद्धात्मने नमः ॥ ॥ मंशु श्री
या ॥ मंशु धार्षी महावीर ॥ सर्वज्ञानराय

कं ॥ सर्वसिद्धिश्च नैनाथः मंशु धार्षी नमाम्यहं
अभाषणाभावा ॥ शुद्धं हृदयं वानराससह
र्षिः पद्मवनसीस्थितः सर्वज्ञविद्वानमाह
यप्रदः श्रीपाञ्चपादुमं ॥ वामनापिकर्म
उत्तमचकमलः दृष्टाकर्मपूजकः वंद्यं पञ्चम



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कनूत्तम
य ॥ इति शिवकनूत्तममयचिन्मनूषं ॥ संख्याति
निकुल्यष्टिवृद्धिना विनाशं संसा न साग न नि
मानजनाद्धनीं नीनोम्यहं यमकाशुष्टि कं सूर
कृष्ण ॥ ॥ जगन्मनिलोक ४५ न ॥ नमस्तु पृथु

षावीन नमस्तु पूत्र्याहमः नमस्तु भांज
लिक ना धर्मनाजं नमास्तु ॥ ॥ यमनाक
हेनवया ॥ सनायनायदाननी चिलाचनी
चगुरुं सयाधमृद्गदासनि धनीकने
सगुरुनि ॥ समंनहडधमनाह ससेयमा

नशासकी नमस्तु आमिहे नवी यमीनकी म
हाविर्गु ॥ ॥ नामृजकालिकाये ॥ श्रीकाली
कालनाग्रीकवलिनचषका कालहंदाहका
या कीकालीकालक शिस्थपूटगतलिनामृ
उमानाकुलीगी ॥ संधरुसिपिभूनकृष्टपमि

मि प्रकृत मो नर्मि पाया त्सो घका ली ह
लक पून क ना की दिधी की ४५ न ह ॥ ॥ अरु
माह काया ॥ वा श्री माह ४५ नी चै व को मानो
वैकु वी न ॥ वा ना ही न र्थे जाहि न मूर्ण
प्रथमा म्मही ॥ ॥ महाव श्री वा ॥ य त्या प्रसा

दंसम वा प्य मर्त्या नृदा व न सि धू क ला नि म
॥ विहाय विनी क य मा प्रवी कित्वा नो मि द
विं गि नि जी सु ल श्री ॥ ॥ प्र कित्वा ना या ॥ प्र मि
स न न म सु र्य ॥ ॥ स्व कृ दि नृ स प्र लं ॥ शु क
प्र कृ मि नि र्ण सी व ज स त्वा त्मि की प नी ॥ ॥

साहसुप्रमर्दनीया॥ कृष्णवर्धनमहाधानी॥ सु
काधारीमहोवरी॥ इदंनरुनसंघर्षनी॥ का
धनागीनमाम्यहं॥ ॥ मायूनीया॥ महाहाना
इहवर्धनी॥ मवर्धप्रहाकनी॥ मायूनीचन
मस्तुविद्यानाहानीनमाम्यहं॥ ॥ श्रीगवली॥

या॥ चानूवकुर्विष्मलाओंविकर्षाणजध
निशीपप्रनागमनूगदविनमस्तुऊगनीप्र
ह॥ ॥ मंगनूसानिशीया॥ वेद्व्यस्तकनिर्ग
सी॥ मदनोस्तुकविप्रमी॥ कारवादेच्छदनी
इवीनमस्तुदिक्कपिशी॥ ॥ विद्याधनीया॥

ननीन्त्युदियूवित्तसिग्वपूपाङ्कलप्रहा
यकाशीहनासा पमिमरुटमाशिव्यनृचि
हि॥ अहानापीनीगाजिनचनतर्पिकनूरुयू
गी॥ नमब्रजाकुषीधक्षसिऊरधीवीह
गवारि॥ विद्याधनीऊगन्मान्नअहया

कलशदेवता॥ नाचनीवर्तिनीदविपातुमांबू
 द्रदाकिनी॥ नवग्रहा॥ आदिपुत्रा॥ ऊ
 पाकसमर्पिका॥ का॥ पयमहायूक्ति॥ न
 मानिंसर्वपापघ्नं प्रशमामिदिवाकनी॥ १॥
 चंद्रमाया॥ इति॥ शिवपुत्रानाहं॥ डोनादा॥

हवर्षहवी॥ नमामिष्ठाभिनन्दनं॥ अष्टमूर्क
टलवर्ष॥ २॥ मंगलया॥ अनदीगर्हसहर्ष
विशुद्धसमप्रहरी॥ कमानंष्टाकिहर्षचं॥
मंगलप्रथमाम्यही॥ ३॥ वृद्धया॥ प्रियंगुकनि
काश्यामनृपथप्रतिमीपुथी॥ सोम्यसोम्यग

हमपनी॥ नमामिष्ठाभिनन्दनं॥ ४॥ बृहस्पति
या॥ दवानांचक्रवीर्षच॥ गुर्नीकीचनसन्नि
ही॥ उक्तमूर्कितिलाकवृ॥ प्रथमामिबृहस्प
ति॥ ५॥ उक्तया॥ हिमकंदमृत्तमालाहृ॥ दे
श्यानीपिनमंगुर्नी॥ सर्वमसुप्रवक्तारैलाग

वं प्रथमाम्यहं ॥ ४॥ निश्चयया नीलांजननि
हृदयं नविपुष्टमहाग्रहं ॥ कन्यायागर्हं
हृदयं वंदे कन्यानिश्चयं ॥ १॥ नाक्या
अर्धकायं महादीपं चंद्रदेवप्रमर्दनं ॥ हि
हिक्रगर्हं हृदयं न नाक्यप्रथमाम्यहं ॥ ७ ॥
कन्याया ॥ पातालधूमसंकाशं नागग्रहनमस्क

नीलांजनप्रदात्मकीयानं न कर्तुं प्रथमाम्यहं
हृदयं निश्चयं संकाशं ॥ ४॥ नागप्रदात्मकीयं
सर्वविषयसर्वकालीनं ॥ १॥ अन्त्यदर्वनमाम्यहं ॥ १०
यास्य कर्मिदं स्फूर्तिः यः परिच्यमिमा
न वा ॥ दिवा वा यदि वा नागग्रहपीडास्वन
४॥ निश्चयं ॥ ११ ॥ हृदयं निश्चयं संकाशं सुमाफम